NEERAJ MANDLOI

40/100

...(जारी) Continued (जारी)

लेख बहुत ही कमजोर है

निबंध

भारत में स्वास्थ्य : स्थिति, समस्या तथा सुधार

पहला सुख निरोगी काया

वास्तव में मनुष्य चाहे जितना विकसित क्यों न हो जाये, अच्छे स्वास्थ्य के बिना उसकी सारी उपलब्धियां व्यर्थ हैं। हालही में आये कोरोना महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य की मूलभूत जरूरते क्या है।

भारत मे आदि काल से ही एक स्वस्थ शरीर को महत्व दिया गया है। एक स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। हमारे विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक महर्षि चरक, सुश्रुत, जीवक आदि ने मानव सभ्यता को अनेक औषधियां व सूत्र दिये। आज भी भारत मे स्वस्थ संबंधित के साथ-साथ आयुष मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय आदि भारत के स्वास्थ्य योजनाओं

को देखते हैं व योजना तैयार करते हैं।

भारत अपनी जीडीपी का लगभग 1.77% भाग स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय करता है। कोरोना महामारी के समय विश्व ने भारत की मानवीय चेहरा प्रत्यक्ष रूप से देखा। तब जबकि कई देश अपनी विकास गति को प्रथम प्राथमिकता दे रहे थे भारत ने भारतीयों को प्राथमिकता देते हुये, उचित पर लॉकडाउन करने का निर्णय लिया। लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ मुहैया कराईं। यही नहीं, जब भारत ने स्वनिर्मित टीके का निर्माण किया तो इसे क्रमबद्ध तरीके से भारत के साथ-साथ अन्य देशों तक पहुँचाया।

भारत में आप स्वास्थ्य व्यवस्था की बात करें तो भो ओर सीमित की अनुशंसा पर भारत ने त्रिस्तरीय स्वास्थ्य प्रणाली अपनाई।

भारत में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, जिला सरकारी सहकारी अस्पताल तथा स्थानीय क्षेत्र हेतु सब सेन्टर, स्वास्थ्य संरक्षण संस्थान है।

सब सेन्टर में एक चिकित्सक, एक नर्स अथवा मिडवाइफ के साथ-साथ अन्य पैरा मेडिकल स्टाफ होता है। सब सेन्टर उन स्थानों पर स्थापित किया जाता है जहाँ जनसंख्या 5000 से अधिक हो। पहाड़ी या दुर्गम स्थानों पर एक संख्या मात्र 3000 है।

प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, सब केन्द्र व कम्युनिटी सेन्टर के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी है। प्राथमिक चिकित्सा में चिकित्सक, नर्स व अन्य पैरा मेडिकल स्टाफ होता है। केन्द्र स्थापना हेतु जनसंख्या 30 हजार होनी आवश्यक है। तथा पहाड़ी क्षेत्रों में 20 हजार। प्रत्येक 4-5 सब सेन्टर पर एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र होता है।

कम्युनिटी सेन्टर, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के ऊपर की इकाई है। जहाँ उन्नत स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ-साथ विशिष्ठ चिकित्सकों की भी नियुक्ति की जाती है। जिसमें महिला एवं शिशु विशेषज्ञ, हृदय रोग, हड्डी रोग विशेषज्ञ आदि शामिल हैं। केन्द्र की आवश्यक जनसंख्या एक लाख बीस हजार व पहाड़ी क्षेत्रों में 80 हजार निश्चित की गई है।

त्रिस्तरीय व्यवस्था के अतिरिक्त जिला स्वास्थ्य केन्द्र, निजी संस्थान आदि भी स्वास्थ्य सेवा दे रहे हैं। भारत में निजी संस्थानों में निवेश बढ़ा है। वे आज उन्नत तकनीक व व्यवस्थित तरीके से स्वास्थ्य सेवा देने में सक्षम हैं।

आयुष मंत्रालय भारत सरकार की अनूठी व महत्वपूर्ण पहल है जिसमें पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है।

Scanned with CamScanner

भारत में स्वास्थ्य समस्याओं का अंबार है। 15वें वित्त आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की स्वास्थ्य संरचना, जरूरत के मुताबिक नहीं है।

भारत में प्रति 1400 लोगों पर मात्र एक चिकित्सक है। ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें तो वहाँ यह आँकड़ा और भी गंभीर है।

ग्रामीण भारत में देश की 68% जनसंख्या निवास करती है परन्तु मात्र 18% बेड उपलब्धता है।

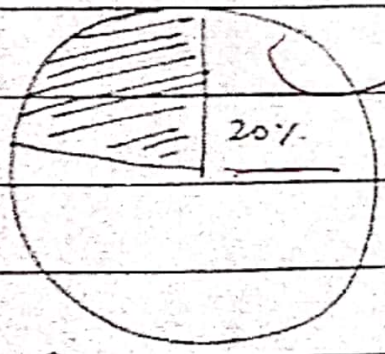

ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधा

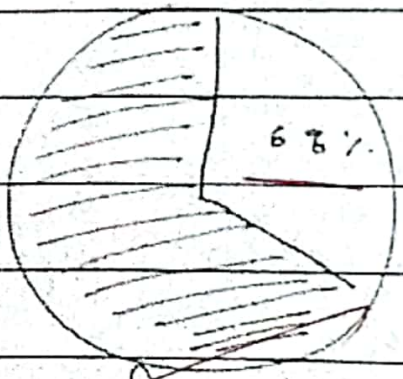

ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या प्रतिशत

Scanned with CamScanner

जब कोरोना महामारी का अतिक्रमण भारत में हुआ तो भारत मौजुदा स्वास्थ्य व्यवस्था के साथ इससे लड़ने में सक्षम नहीं था क्योंकि भारत में मात्र कुछ ही ऑक्सीजन सिलेंडर निर्माता थे। ICU का कमी, चिकित्सकों की कमी, अस्पतालों का कमी, सुदूर क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने की समस्या आदि अनेकानेक समस्याएँ थी जो उजागर हुई।

एलोपैथी चिकित्सा अधिक खर्चीली है। जिसके चलते कई व्यक्ति अस्पताल में इलाज करवाने से कतराते हैं। भारत में 64% व्यक्ति टी.बी. का संपूर्ण इलाज पूरा ही नहीं कर पाते।

साथ ही चिकित्सालयों का घनत्व भी आवश्यकतानुसार नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को इलाज हेतु

लम्बी यात्रा करनी होती है जिसमें व्यय वृद्धि होती है।

महिलाएँ व शिशु मूल रूप से स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं के अभाव में प्राण त्याग देते हैं। भारत में मातृ मृत्यु दर 113 प्रति लाख व शिशु मृत्यु दर 32 प्रति हजार है जो एक गंभीर आँकड़ा है। वहीं मध्यप्रदेश, उड़ीसा, बिहार आदि राज्यों में मातृ मृत्यु दर व शिशु मृत्यु दर और भी अधिक है।

बच्चों में कुपोषण 35% है। अर्थात हर तीन में से एक बच्चा कुपोषण का शिकार है। हाल ही में ग्लोबल हंगर इंडेक्स के अनुसार भारत की स्थिति 119 देशों में 102 वीं है। भारत में स्टंटिंग 35%, वेस्टिंग 17% व पोषण की कमी 32% है। कुल 58% शिशु एनिमिया जैसी गंभीर बीमारी के शिकार हैं।

Scanned with CamScanner

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत को कुल बजट का 2% भाग चिकित्सा में लगाने का आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत 5 प्रमुख मूलभूत आयामों को शामिल किया गया है।

पहला है, महिलाओं व शिशु का संपूर्ण विकास। इसके लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के तालमेल से 'रामनचा' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिसमें परिवार स्वास्थ्य से बालक के 18 वर्ष तक के होने तक एक व्यापक कार्यनीति है।

दूसरा, अवसंरचना में पीपीपी मॉडल को बढ़ावा देना व निजी इसकी सहायता से स्वास्थ्य सुविधाओं को विस्तारित करना।

तीसरा, असंक्रामित (नॉन कम्युनिकेबल) रोग जैसे कैंसर, मधुमेह, रक्तचाप आदि के हेतु

प्रश्न: (2.2) Continued (जारी)

स्वास्थ्य चेकअपस् को बढ़ाना। साथ ही इनसे होने वाले व्यय को कम करना। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय एड्स कार्यक्रम, मधुमेह कार्यक्रम आदि संचालित किये जा रहे हैं।

चौथा, संक्रमण रोग जैसे कोरोना, मलेरिया डेंगू, काला जर, छायी पाँव आदि हेतु राज्य व स्थानीय सरकारों के साथ मिलकर ~~सावधा~~ सावधानी संबंधी जानकारी देना व मेडिसिन्स् उपलब्ध कर वाना शामिल है।

पाँचवा, स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की गुणवत्ता बढ़ाना व उपलब्धता सुनिश्चित करना। इस हेतु उन्नत प्रशिक्षण संस्थान व अनुसंधान आदि स्थापना व मौजूदा व्यवस्था को और अधिक विश्व स्तरीय बनाना है।

डिजिटलीकरण के चलते टेलीमेडिसिन का चलन बढ़ा है परन्तु यह सुविधा अभी ग्रामीणांचलों तक पहुंचना बाकी है।

Scanned with CamScanner

उत्तर: बजट 2021 में स्वास्थ्य संरचना के लिये कुल 64000 करोड़ का प्रावधान निश्चित हुआ है साथ ही पीपीपी मॉडल को बढ़ावा देने का प्रावधान किया गया है।

आयुष्मान भारत विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा स्कीम है इसके अंतर्गत एक परिवार को 5 लाख तक की स्वास्थ्य सेवाएं दी जा रही हैं।

भारत के कुपोषण से लड़ने के लिए पोषण अभियान 2.0 चलाया है जिसका लक्ष्य कुपोषण को 2022 तक खत्म करने का है।

स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता व स्वस्थ जीवन शैली पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत जनसंख्या की दृष्टि से युवा देश है परन्तु 2050 तक 15% जनसंख्या वृद्ध होगी। एक व्यापक स्वास्थ्य नीति की आवश्यकता है।

10

Scanned with CamScanner

(2) राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा।

हिन्दी, अपभ्रंश से विकसित हुई है। हिन्दी मूल भाषा संस्कृत है। हिन्दी विकास 8वीं शताब्दी से होना प्रारंभ हुआ। एक सरहपा, शालिभद्र सूरी आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इसे विस्तार दिया। 10वीं व 11वीं शताब्दी के प्रमुख कवि चंद्रबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' के साथ इसी स्वे ओजस्व तक पहुँचाया। परन्तु हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम युग भक्तिकाल से प्रारंभ हुआ। जहाँ कवि तुलसीदासजी की रामचरित मानस, सूरदासजी की सूरसागर, मीरा जी के भजन आदि घर-घर की दिनचर्या में शामिल हो गये।

आधुनिक भारत के भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी अनेक रचनाओं के माध्यम से हिन्दी शब्दावली को सुसंगठित किया। द्विवेदी काल के कवि हजारीप्रसाद द्विवेदी,

Scanned with CamScanner

रामधारी सिंह दिनकर, अयोध्या प्रसाद जी आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज का जीवंत चित्र ~~उकेरते~~ उकेरते हुये हिन्दी को जन भाषा बना दिया। इसके बाद छायावादी युग में मैथलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, आदि ने प्रयोग प्रारंभ किये व भाषा को एक गूढ़ता प्रदान करी। इसके बाद प्रयोगवादी कवियों ने व लेखकों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा हेतु तैयार कर दिया था। जरूरत थी तो बस प्रशासन द्वारा इसे अपनाए जाने की। भारतीय संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा हेतु बनाने के लिये उचित प्रावधान किये गये। स्वतंत्रता के बाद अंग्रेजी का ~~सम्पर्क~~ राजपत्रावली हेतु प्रयोग 15 वर्ष तक जारी रखने की बात हुई। इस बीच रामचंद्र शुक्ल, व अन्य विद्वानों द्वारा हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली तैयार की गई।

भाग – 17
के अनुच्छेद
343
350
351
आयोग – बीजी खेर

अधिनियम 1968 व नियम 1976 के द्वारा भारत के विभिन्न हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य किया गया तथा अन्य राज्यों ने भी इसके प्रसार को बढ़ावा दिया गया। इसके लिये द्विभाषीय व त्रिभाषीय सूत्र अपनाये गये।

वर्तमान समय में हिन्दी न केवल भारत में अन्य देशों में बोली व समझी जाने वाली प्रमुख भाषा है। विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन इसके प्रसार व विस्तार हेतु किया जाता है।

वैश्वीकरण के कारण हिन्दी में नयी शब्दावली आई है। परन्तु भाषा का शुद्ध प्रयोग कम भी हुआ है। हिन्दी में कम्प्युटीकरण व विज्ञान शब्दावली की आवश्यकता स्पष्ट है। हिन्दी में किसी भी अन्य भाषा से अधिक क्षमता है। हिन्दी को प्रमाणिक बनाने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं।

Scanned with CamScanner

ई-गवर्नेंस

नवोन्मुखी इलेक्ट्रॉनिक सुशासन एक नई शासन व्यवस्था है जिसमें पारदर्शिता, व जनता की भागीदारी बढ़ती है। ई गवर्नेंस के तीन प्रमुख आयाम हैं। ई- प्रशासन, ई- भागीदारी तथा ई- वितरण।

ई गवर्नेंस के लाभ: इस माध्यम से पारदर्शिता में वृद्धि होगी। जनता का प्रशासन में विश्वास बढ़ेगा। उदाहरण: किसी निविदा का ऑनलाइन प्रकाशन, फिर ऑनलाइन बिडिंग तथा चयनित बिडर की ऑनलाइन सूची।

कार्य प्रणाली को स्पष्ट व सरल बनाती ई गवर्नेंस भ्रष्टाचार निवारण के लिये आदर्श प्रणाली साबित हो सकती है।

उ

चुनौतियाँ: इंटरनेट की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों में 30% से कम है। तथा ई-साक्षरता में कमी है।

प्रशासन के कर्मचारी भी नई तकनीक से पूर्णतः अवगत नहीं है। इसे क्रियान्वयन करने के लिये उपलब्धता व ~~डिजीटल~~ डिजीटल साक्षरता बढ़ने की आवश्यकता है।

प्रशासन के प्रयास: कर्मयोगी मिशन के अंतर्गत ई-ट्रेनिंग आदि की व्यवस्था, कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत कम्प्यूटर की अनिवार्य ट्रेनिंग, हाई स्पीड इंटरनेट हेतु निजी कम्पनियों से करार आदि द्वारा प्रशासन ई गवर्नेंस की ओर अग्रसर है।

Scanned with CamScanner

आगे की राह चुनौतियों से भरी है क्योंकि ई-गवर्नेंस में डाटा चोरी आदि जैसी समस्याएँ हैं। जिसके लिए प्रशासन को सख्त व्यवस्थित नीति निर्माण करनी होगी। ई-गवर्नेंस भारतीय शासन व्यवस्था में एक नई शुरुआत लिखेगी। इसके परिणाम अभी से दिखने शुरू हो गई। सार्वजनिक स्वास्थ वितरण प्रणाली में इसके उपयोग से, नीति आयोग के अनुसार 25% अपव्यय कम हुआ है तथा 29% नये हितग्राही व्यवस्था से जुड़ गये हैं।